पारसी रंगमंच में राजस्थानी कलाकार

कृष्ण कुमार[1]

शोध सारांश

नाटक और रंगमंच की प्राचीन परंपरा होने के बाद भी देश में नाटक और रंगमंच का स्वरूप अंग्रेजी नाटकों से प्रभावित हो नया आकार ग्रहण करने लगा। गांव से निकलकर लोकनाट्य शहरों में आकर आधुनिक रूप में ढलने लगे। पारसी नाटक असाहित्यिकए अश्लील और असांस्कृतिक कहे जाने के बावजूद ऐसी नाट्य प्रस्तुतियां दर्शकों को लुभाने लगीं। हालांकि प्रचार के अभाव में पारसी हिंदी रंगमंच की चर्चा तथाकथित बुद्धिजीवियों में नहीं हो सकी किंतु वह यह कदाचित नहीं भूले कि जिस नाटक के विकास की बात की जा रही है उसके मूल में पारसी रंगमंच की भूमिका रही है राजस्थान का रंगकर्म भी इससे अछूता नहीं रहा उन दिनों पारसी हिंदी रंगमंच ने ऐसा जनमानस तैयार किया जो नया नाटक देखने के लिए हर शाम तैयार रहता है और उसके लिए पैसे भी खर्च कर सकता है। अंग्रेजी नाट्य शैली से प्रभावित राजस्थान में शुरुआत में राजाश्रेय में फैली धीरे धीरे छोटी.छोटी रंग मंडलियों के रूप में एक पेशेवर नाट्य शैली का रूप ले लिया छोटे.छोटे गांवकस्बों से लेकर राजस्थान के बड़े शहरों में फैल गई समाज सेवा हो या आजादी की लड़ाई पारसी रंगमंच एवं रंग कर्मियों की विशेष भूमिका रही है राजस्थानी रंगकर्म को आगे लेकर जाने वाली पश्चिमी तकनीक को प्रयोग करते हुए नाटकों की शुरुआत की और नाटकों को रंगमंच का स्तर दिलवाने में अहम भूमिका रही पारसी रंगमंच ने राजस्थानी भाषा गीत संगीत नृत्य वादन वेशभूषा की ओर देशवासियों का ध्यान आकर्षित किया राजस्थान के रंगकर्म में पारसी रंगमंच महत्वपूर्ण स्थान रखता है ।

मुख्य शब्द– पारसी रंगमंच, नाटक कंपनियाँ, नाटय परंपरा, नाटक, घर राजस्थानी रंगकर्म, नाट्य शैली।

[1] सहायक प्रोफेसर, उच्च अध्ययन संस्थान (मानित विश्वविद्यालय), सरदारशहर।

प्रस्तावना .

राजस्थान के रंगकर्मियों की चर्चा से पूर्व यह बताना जरूरी होगा की नाटक के क्षेत्र में फिरंगीयां के भारत में बस जाने के साथ ही नए नए परिवर्तन होने लगे थे। अंग्रेज भारत तो आए साथ ही अपने साथ विदेशी नाट्य विधा भी लाए अंग्रेजों ने अपने मनोरंजन के लिए कोलकाता और मुंबई जैसे बड़े शहरों में नाट्यगृह तैयार करवाए थे। नाट्य ग्रहों में अंग्रेजी के नाटक भी प्रस्तुत किए जाने लगे थे तब ऐसे नाटक देखना बड़ा खर्चीला काम था ऐसा शौक संपन्न परिवार ही कर पाते थे नाटकों की शक्ल ओपेरा जैसी थी। भारतीय रंगमंच से जुड़े लोग भी अंग्रेजों के क्लब या नाट्यगृह की सहायता से नाट्य खेला करते थे पारसी थियेटरों के मालिक पारसी ही हुआ करते थे, वहीं विदेशी नाच गाने मेमों के लटके.झटके और वही अंग्रेजीनुमा तौर.तरीके। पारसी रंगमंच के नाटकों के नाम भी अंग्रेजी में ही हुआ करते थे। अंग्रेजी व पारसी नाट्य शैली ने राजस्थान के रंगकर्म को बहुत प्रभावित किया। राजस्थान के रंगकर्मी अंग्रेजी नाटकों से प्रभावित नजर आए इस दौरान राजनैतिक हलचल और क्रांतिकारियों का संघर्ष विदेशी सरकार के दमन चक्र ने युवा रंग कर्मियों को बहुत आंदोलित किया राजस्थान के रंगकर्म को प्रभावित किया।

<u>आजादी की लड़ाई के छोटे.छोटे रंग मंडलियों के रूप में योगदान .</u>

सन् 1930 में जब स्वतंत्रता संग्राम की गर्म हवा के झोंके देसी राज्यों के द्वार पर दस्तक लगा रहे थे, राजस्थान के कोने कोने में लोक.नाट्य विधा के माध्यम से जन जागृति के प्रयास कर रहे थे। उन्होंने गुलामी के युग में भी देश जागृति की ज्योति को बनाए रखा। लोक कलाकार हास परिहास के बीच अलख जगा रहे थे। जब समाचारों के साथ क्रान्ति की गरमाई हवा आई। सूरजगढ़ शेखावाटी के नव युवकों में नई चेतना का प्रादुर्भाव हुआ ऐसे समय में नगर के 12 मित्रों के उत्साही एवं साहसी दल ने समाज की सेवा का बीड़ा उठाया। किंतु 12 को अशुभ अंक के कारण उन्होंने साढे ग्यारह टोपी नाम से एक संस्था स्थापित की अर्थात एक सदस्य को कच्ची कोड़ी मान लिया गया। संस्थापक सदस्य थे बृजलाल, मालीराम शंकरलाल डोलिया, चिरंजीलाल, देवकीनंदन, सागरमल, रामस्वरूप केडिया, बनवारी लाल हलवाई, राधा.कृष्ण झुंझुनू वाला, नंदलाल, किशनलाल केडिया। उन दिनों चिड़ावा में नाटकों के मंचन की धूम थी और वहां के उत्साही युवकों ने राम भवन संस्था के तत्वाधान में एक नाटक मंचित

किया था जिससे प्रभावित हो सूरजगढ़ में युवा समाज का पहला सम्मेलन किया गया। जिसमें सामाजिक सुधार के लिए नाटकों के मंचन और समाज सेवा की योजना बनाई गई। इसी क्रम में 23 नवंबर 1931 को साढे ग्यारह टोपी संस्था का नाम श्री कृष्ण नाट्य परिषद कर दिया गया पहला नाटक ष्वीर अभिमन्यु' खेला गया और नाटकों की मांग बढ़ चली। अनेकों नाटक खेले गए इसी तरह राजस्थान के हाड़ौती, शेखावाटी, मेवाती, मेवाड़ी, मारवाड़ और ढूंढाड़ सभी क्षेत्रों में ऐसी छोटी.छोटी रंग मंडलिया पनपी। जब लोकनाट्य और तमाशा मनोरंजन के केंद्र बने राजस्थान रंगमंच ने देश में आजादी की अलख जगाई अंग्रेज हुकूमत की तमाम बंदिशों को झेलते हुए संघर्ष के स्वर को मुखरित बनाए रखा।

रंगकर्म पर बंदिशें .

नाटक दुर्गादास राठौड़ का सात रुपए का टिकट तब डेढ़ सौ रुपए में बिकता था। बाद में कुछ मुस्लिम नेताओं के आग्रह पर बंगाल सरकार ने इस पर प्रतिबंध लगा दिया। क्रांतिकारी नाटकों के प्रदर्शन में अंग्रेज हुकूमत ने भांति.भांति की बंदिशें लगा रखी थी। कलाकारों को यातनाएँ भी दी जाती थी। राजस्थान के लोक कलाकारों पारसी रंगकर्मियों के नाटकां का मंचन मुश्किल से होता था। स्क्रिप्ट की जांच के बाद नाटक को संसर किया जाता था किंतु बंदिशों के बावजूद नाटक खेले जाते रहे। कलाकार भी ऐसे थे सरकार को नाटक की स्क्रिप्ट दूसरी भेजते पर मंचन मूल नाटक का ही करते थे।

जब अजमेर में 1945 में जय हिंद' नाटक खेला गया और उसका बड़ा विरोध हुआ, तब भी राजस्थान के रंगकर्मी हिम्मत नहीं हारे। उन्होंने लखनऊ में पहुंचकर नाटक किया जहां पहले से ही नाटक के विरोध में जनमानस तैयार कर दिया गया था। सन् 1944 में गणपत लाल डांगी ने मोहन नाटक कंपनी की स्थापना की जिसका पहला नाटक ष्गरीब की दुनिया' था। पारसी हिंदी रंगमंच की कंपनियां बनती और टूटती रहीं।

राजस्थान से बाहर की पारसी नाटक कंपनियों में राजस्थानी कलाकार .

जब पारसी थिएटर कोलकाता में परवान चढ़ा इसके पीछे राजस्थान के कलाकारों का योगदान रहा है। उस वक्त राजस्थान के कलाकारों का बोलबाला था। कोई नाटक कंपनी तब तक सफल नहीं हो सकती

थी, जब तक कि वह राजस्थान के कलाकारों को साथ लेकर नहीं चले। जयपुर, बीकानेर एवं जोधपुर के गायकों अभिनेताओं की चारों और धूम थी। आज जैसी सुविधाएं थिएटर के साथ नहीं थी राजस्थान के रंगकर्मी गाड़िया लोहारों की तरह रंगमंच का सामान लिए विभिन्न शहरों में नाटक किया करते थे। तब न तो रंगमंच को कोई प्रायोजक मिलता था ना संरक्षण प्राप्त था। राजस्थानी वेशभूषा और रंगकर्मियों की राजस्थानी अभिव्यक्तियों के ढंग बड़े अनूठे हुआ करते थे। तब कोलकाता में नाटक की दो कंपनियां प्रसिद्ध थी. कोरियनथियन थिएटर एवं अल्फ्रेड थिएटर और दोनों के मालिक पारसी हुआ करते थे। उन कंपनियों में राजस्थान के 35 कलाकार काम करते थे। नाट्य कंपनियों के मालिक कलाकारों की खोज मं राजस्थान आए उन्होंने कलाकारों का चयन किया। संवत् 1954 में सर्वप्रथम बरेली के जमींदार साहब की थियेट्रिकल कंपनी जोधपुर आई।

जयपुर और जोधपुर .

जयपुर का पारसी थियेटर बेमिसाल था। जयपुर की प्रसिद्ध रामप्रकाश थिएटर मंडली में प्रमुख कलाकार दादाभाई रतन जी डूडी, बरजोर जी, रुस्तम जी, कावस जी और आदिल जी महाराज ने जर्मन बैंड मास्टर वाकर के जरिए नाटक मंडली के लिए इंग्लैंड से वाद्य यंत्र मंगवाए मंडली में कलाकारों के साथ अभिनेत्रियां स्वर्ण लता एवं चांद बाई भी शामिल थी। तवायफों के साथ लोक कलाकार भी नाटक में काम करते थे। जयपुर के सर गोपीनाथ पुरोहित ने शेक्सपीयर के नाटक एस यू लाइक इट' और 'रोमियो जूलियट' का हिंदी अनुवाद क्रमशः मनभावन तथा प्रेम लीला के नाम से किया। राम प्रकाश थिएटर में उन दिनों खेले गए प्रसिद्ध पारसी नाटक थे.बदरे मुनीर, बेनजीर का बेनजीर, अलाउद्दीन और अजीब व गरीब चिराग, हवाईमजलिस और लैला मजनू।

सवाई राम सिंह जी के बाद जयपुर में नाटक का सिलसिला प्रायः बंद हो गया सन 1937 में न्यू अल्फ्रेड थिएटर कंपनी जयपुर आई तो रामप्रकाश में ही नाटक किए।

राजस्थान में पारसी रंगमंच की पेशेवर मंडलियाँ आया करती थी। यह मंडल यहां जोधपुर रियासत में भी आई उनके आगमन के साथ ही वहाँ के कलाकार पारसी रंगमंच से जुड़ते चले गए। यह भी राजस्थान में

पारसी थिएटर के उद्भव एवं विकास में जोधपुर रियासत का महत्वपूर्ण योगदान है जिसने समर्थ रंगकर्मी दिए हैं रंग कर्मियों में डांगी परिवार का अवदान अबूझा अंजाना नहीं है।

महाराजा सवाई मान सिंह के पुत्र राम सिंह प्रथम ;सन् 1667-1688) भी नाटक में रुचि लेते थे। उनके आदेश पर विश्वनाथ भट्ट ने श्रृंगार नाटिका की रचना कीए उनके पौत्र विष्णु (1688-1699) द्वारा मंचित किए जाने का विवरण मिलता है।

संवत् 1935 मिति कार्तिक बदी 8 शनिवार मुकाम सवाई जयपुर फारस देश के मिशांक पिस्तम ने जलेब चैक में इंद्रसभा का तमाशा बहुत अच्छा किया। जिससे प्रसन्न होकर श्री महाराज साहब ने चांदी की टकसाल के सामने राजामल के तालाब में तमाशेघर की नींव मिति वैशाख बदी 9 को लगाई। वस्तुतः फारस देश से तात्पर्य पारसी थियेटर से ही था, जिसकी बुनियाद भारत में पड़ चुकी भी।

इन्द्र सभा के कलाकार मुंबई से आए थे। महाराजा सवाई जयसिंह ने भी आमेर के किले में मंच का निर्माण करवाया था जहां नाटक से कठपुतली नाटक का प्रदर्शन हुआ करता था। पारसी नाट्य परंपरा को पूर्णतया संरक्षित किया सवाई रामसिंह द्वितीय ने, उन्होंने जयपुर के पारसी थियेटर को प्रश्रय भी दिया विकसित भी किया, उन्होंने संगीत एवं कला से संबद्ध विभाग गुणीजन खाना का पुनर्गठन किया। कलाकारों को प्रशिक्षण देकर कलाकार तैयार करवाए। संवत् 1935 मिति सावन 13 बृहस्पतिवार मुकाम सवाई जयपुर रामप्रकाश पारसी नाटक घर नया बनवाया गया उसमें इंद्रसभा का तमाशा दिखाना शुरू किया गया उन्होंने राम प्रकाश टॉकीज में बाहर की कंपनियों को आमंत्रित किया लक्ष्मण दास जी डांगी ने विक्रम संवत 1956 में जोधपुर में मारवाड़ कंपनी बनाई राजस्थान में यह पहली पेशेवर कंपनी डांगी परिवार के मानिक लाल डांगी नाटक कंपनी के साथ जोधपुर में नाटकों का प्रदर्शन करते थे तत्कालीन जोधपुर नरेश महाराजा हनवंत सिंह की पारसी रंगमंच के नाटकों में अभिरुचि थी उन्होंने अपनी बहन के विवाह में पारसी थिएटर की कंपनी बुलाई जो कृष्ण टॉकीज में कुछ दिन नाटक खेले।

बीकानेर .

पारसी रंगमंच की गतिविधियाँ बीकानेर के महाराजा डूंगर सिंह के समय प्रारंभ हुई किंतु गति प्रेमसुख व्यास द्वारा स्थापित जोधपुर बीकानेर थीएट्रिकल कंपनी की स्थापना से एवं इस संस्था को राजपरिवार का आशय होने के कारण कोर्ट गेट के पास नाटक हरिश्चंद्र सिल्वर किंग, असीरेहीर्स, कनकधारा आदि नाटक खेले। व्यास जी दृष्टिकर नाट्य समिति के संस्थापक रहे सन 1930 में सरदारशहर निवासी शोभा चंद्र जम्मड़ ने लोकरंजन परिषद की स्थापना की एवं राजस्थान का पहला एकांकीकार व रंगमंच स्थापित करने वाले माने गए उनके नाटक बदलो भूषण, टिंगर टोली, विदूषण वृद्ध विवाह बहुत प्रसिद्ध हुए।

प्रेमसुख व्यास के नाटक महाराजा गंगा सिंह ने लालगढ़ महल में में देखे। बीकानेर में रेलवे क्लब गंगा थियेटर राष्ट्रीय रंगमंच की स्थापना से भी पारसी रंगमंच को दिशा मिली।

धौलपुर .

धौलपुर के राणा निहाल सिंह लोकेंद्र 1873-1901 का भी पारसी थियेटर से बड़ा लगाव रहा उनके संरक्षण में हाफिज अब्दुल्ला ने इंडियन इंपीरियल थीएट्रिकल कंपनी स्थापित की।

झालावाड़ .

महाराजा भवानी सिंह ने शेक्सपीयर ड्रामेटिक सोसायटी स्थापित की पंडित पुरुषोत्तम लाल ने अनुवाद किया शेक्सपीयर के नाटकों का 36 बालकनियों वाली अंडाकार शेक्सपियरियन रंगस्थली के रूप में विख्यात भवानी नाट्यशाला में पहला नाटक 16 जुलाई 1921 को खेला गया था पहला नाटक 'अभिज्ञान शकुंतलम्' था। 33 फीट लंबा 28 फीट चैड़ा और 23 फीट ऊंचे मंच पर ऐसे कई नाटकों में पशुधन को असली पात्र बना कर मंच पर उतारा गया।

भरतपुर .

महाराजा किशन सिंह के संरक्षण में एक थिएटर कंपनी स्थापित की गई। सन् 1928 में सूरजभान ने भरतपुर ड्रामेटिकल सोसायटी की स्थापना की।

टोंक .

रियासत के नवाब इब्राहिम अली खान 1929-30 के संरक्षण में नाटक मंडलियाँ आती थी, उनमें से भरतपुर ड्रैमेटिक सोसाइटी अजमेर की कल्लू बादशाह की नाटक मंडली अलेक्जेंड्रिया थीएट्रिकल कंपनी प्रमुख हैं।

अलवर .

पारसी रंगमंच को अलवर नरेश महाराजा जयसिंह ने भी प्रोत्साहित किया नाट्य संस्थाओं को संरक्षण प्रदान किया।

अजमेर .

कभी मदार गेट के बाहर एक थिएटर में उर्दू नाटक खेले जाते थे रामायण मंडल धार्मिक नाटक करने की परंपरा थी राजस्थान में पारसी रंगकर्मी लक्ष्मण दास दागी प्रेमसुख व्यास फूलचंद डांगी, पूनम चंद जी देवड़ाए उस्ताद तुलसीदास, नृत्य सम्राट पंडित मथुरा प्रसाद, खेमराज पंवार, मास्टर बृजलाल वर्मा, सुल्ताना, रामदुलारी, बसंती चूरू वाली, रमोला, तारा सिन्हा, भाई राजल, हैदराबादी, माणिक लाल डांगी, गणपत लाल डांगी, मीना चैधरी आदि प्रमुख कलाकार रहे।

निष्कर्ष .

कभी नवलगढ़ शेखावाटी में मुमताज नामक नृत्यांगना तुर्रा कलंगी लगाकर मंच पर आती थी तो दर्शक समुदाय ठगा सा रह जाता था इसी से राजस्थान के रंग कर्मियों ने राजस्थान की परंपरागत पोशाकों को पहनाकर नाटक में अभिनय करना अधिक पसंद किया मंच पर कलाकार की उपस्थिति प्रवेश के साथ ही परिचय देती थी।

पारसी हिंदी रंगमंच के जमाने की बात आज धुंधली अवश्य पड़ गई है किंतु उस समय की धूल की परत हटाने से उनके भीतर झांका जा सकता है। यह बातें अपने आप में इतिहास है नाट्य शैली का अनूठा रंग.रूप है लेकिन आज पारसी थियेटर का कोई नाम लेता नहीं है आज किसी से पूछो उसने कभी

पारसी थियेटर का नाम सुना है तो बगले झांकने लगता है। भारत का पहला पेशेवर नाट्य शैली किसी जमाने में आम लोगों के दिल बहलाने का एक अहम जरिया जो पारसी थियेटर के नाम से मशहूर था आज विस्मृति यानी फरामोशी के गर्भ में समा गया है। पुराने जमाने के कुछ बुजुर्गों के दिलों में इसकी हल्की सी याद बाकी है जिसे जाहिर करने का ने कोई साधन है ना कोई मौका है ऐसी हालात में पारसी थियेटर को विस्मृति के गर्भ से निकालकर पेश करना वाकई सूझबूझ हिम्मत और मेहनत का काम है निश्चय ही नाट्य कला के प्रचार.प्रसार भाषाओं के विस्तार एवं समन्वय आजादी का अलख जगाने और भावात्मक एकता की दृष्टि से पारसी हिंदी रंगमंच का बड़ा बोलबाला था देश में और ऐसी सांस्कृतिक नाट्य प्रस्तुति के लोग बड़े प्रेमी थे।

पारसी रंगमंच के प्रकाश स्तंभ लोक कलाकार डांगी ने कहा था मैं 70 वर्ष की उम्र में भी महसूस करता हूं कि आज भी कोई वैसी कंपनी बने तो एक बार फिर मैदान में कूदकर अखाड़े में आ जाऊं लेकिन आज मैं वैसे दर्शक है नए कलाकार है नए नाटककार है ना मालिक है मैं अब भी पुरानी यादों में खोया खोया हुआ हूं अभी मेरे दिल में यही अरमान है कि फिर वैसा ही थिएटर बन जाए।'

संदर्भ.सूची

1. रणवीर सिंह, संपादित पारसी थियेटर जयपुर के पास अशोक कुमार दास, पृष्ठ सं.135
2. यह इमारत है या इतिहास लेखक प्रेम जी प्रेम नवभारत टाइम्स, जयपुर
3. कुमार रीता, स्वातंत्रयोत्तर हिंदी नाटक-मोहन राकेश के विशेष संदर्भ में, पृष्ठ सं.-13
4. नवभारत टोइम्स, जयपुर, 30 अगस्त 1990,डांगी से श्याम माथुर की बातचीत, पृष्ठ सं.-27
5. दास अशोक कुमार, पारसी थियेटर लेख-जयपुर में पारसी थियेटर, पृष्ठ सं.-135
6. प्रेम जी, 1991, प्रेम यह इमारत है या इतिहास लेख नवभारत टाइम्स, जयपुर, पृष्ठ सं.-202
7. वाष्णेय, चंद्रगुप्त, 28 मई 1991, परामर्शी के गर्भ में समा गया पारसी थियेटर नवभारत टाइम्स, जयपुर
8. नवभारत टाइम्स, जयपुर 30 अगस्त 1990 ठाकुर की बातचीत
9. वीर विनोद में कविराज श्यामल दास का जिक्